



जीवात्मा

➤ स्वरूप

➤ कार्य

➤ प्रकार

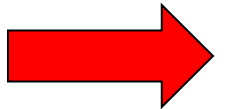
➤ अवस्था

जीवात्मा

स्वरूप :

सच्चिदानन्द ब्रह्मका चिदंश

(सत् + चित् + आनन्द)



जीवात्मा

कार्य :

- स्व-परका बोध कराना
- शरीरको सचेष्ट करना
- शरीरद्वारा सुख-दुःखादिका अनुभव करना
- पाप-पुण्य आदिके फलोंको भोगना
- एकसे दूसरे शरीरमें जाना
- एकसे दूसरे लोकमें जाना

जीवात्मा

प्रकार

पुष्टि

मर्यादा

प्रवाही

पहचान ► प्रभुपरायण

शास्त्राज्ञापरायण

संसारासक्त

कामना ► सेवा-भक्ति

स्वर्ग-मोक्ष

सुखभोग

फल ► भगवल्लोक

स्वर्ग-मोक्ष

जन्म-मरण

चर्षणी = भटकते-अस्थिर, अरुचि, खंडितफल

जीवात्मा

अवस्था :

➤ बद्ध

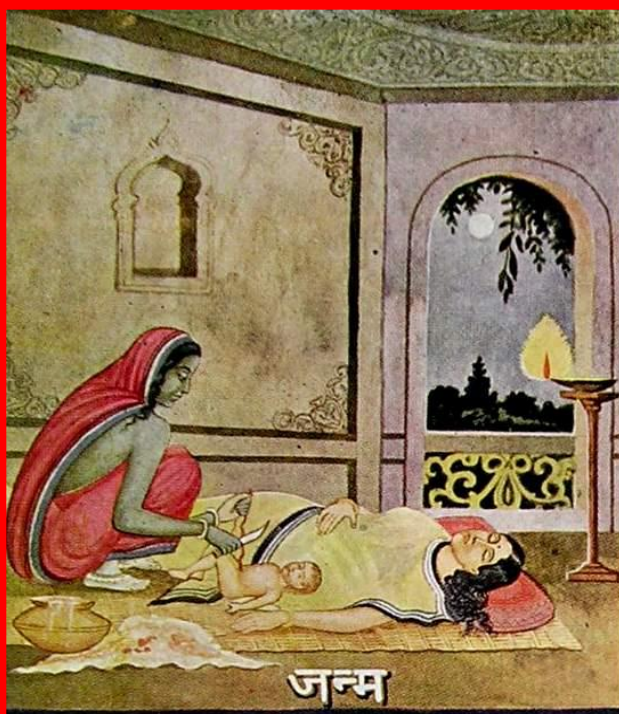
➤ मुक्त

■ जीवन्मुक्त

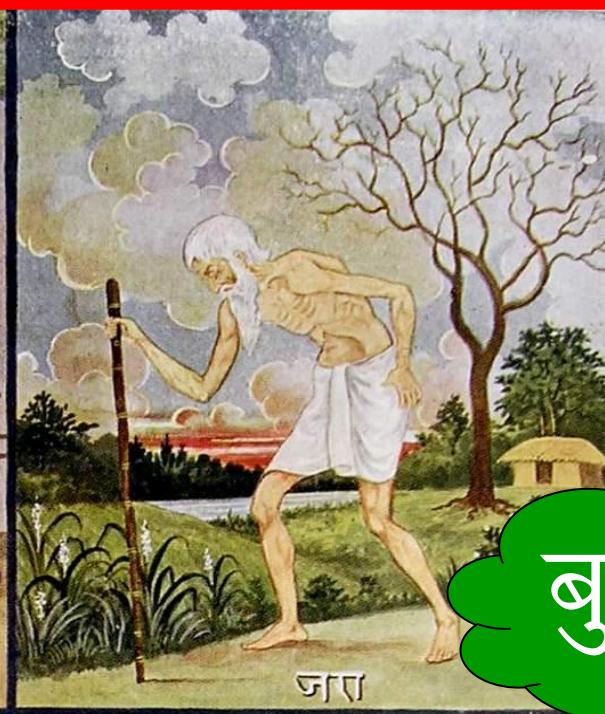
■ विदेहमुक्त

बद्धअवस्था



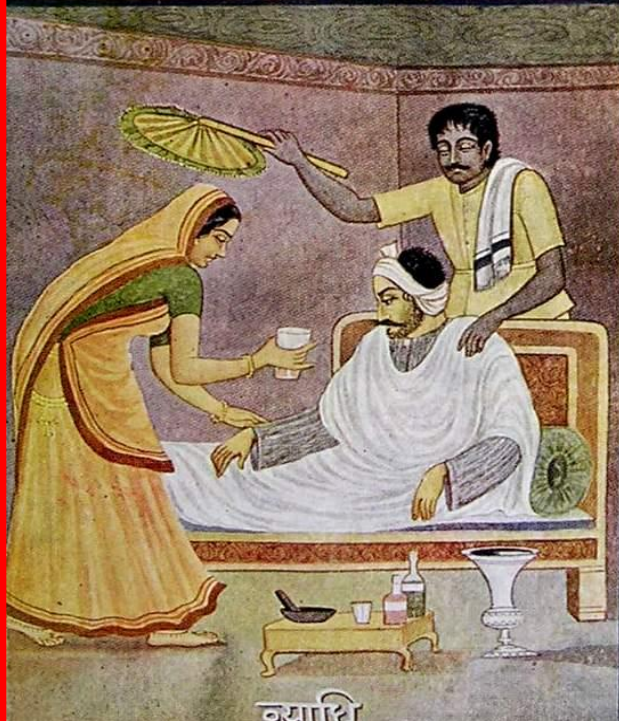


जन्म



जरा

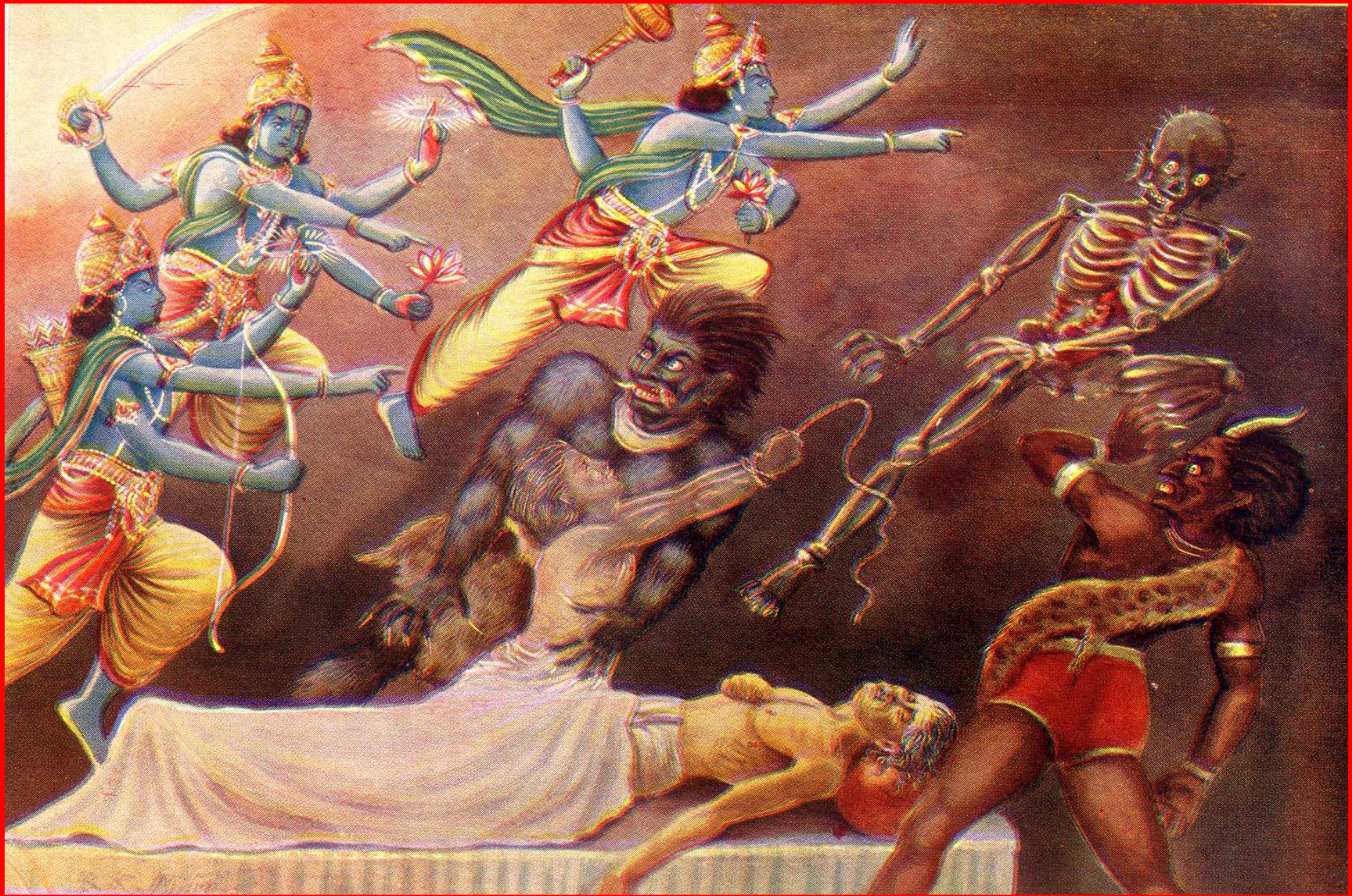
बुद्धचरित



व्याधि



मृत्यु

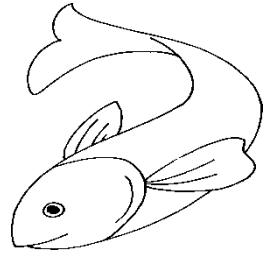


कर्मानुसार देहान्तर/लोकान्तर
में जानेवाला जीव

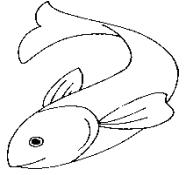




जीवके जन्म अच्छी-बुरी योनिमें क्यों होते हैं ?



जीवके जन्म अच्छी-बुरी योनिमें क्यों होते हैं ?

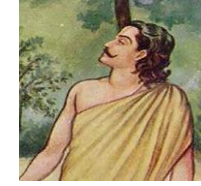


सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः

निबध्नन्ति महाबाहो! देहे देहिनम् अव्ययम् ॥ (१४।५)

पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान् गुणान्

कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनि-जन्मसु ॥ (१३।२१)



सत्त्व, रजस् तथा तमस् ये तीन प्रकृतिसे उत्पन्न हुवे गुण हैं. ये गुण देहमें

रहनेवाले देही-आत्माको बांधते हैं.



प्रकृतिमें रहा हुवा पुरुष प्रकृतिके गुणोंको भोगता है. गुणोंका यह सङ्ग(कर्म)

ही उसके सदसद्योनिमें जन्मका कारण है.



मुक्तजीव



